International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457

Volume-3 Issue-6 December- 2016 P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

आधुनिक भारतीय कला का परिचय और स्वतंत्रता पूर्व भारतीय कला में अमूर्तता

Dr. Ramavtar Meena

Assosiate professor Drawing and painting

Govt college, tonk (Raj)

सार

कला का इतिहास मानव जीवन की तरह ही अति प्राचीन रहा है। मानव जीवन की उत्पत्ति के साथ–साथ ही कला की भी उत्पत्ति हुई और मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ ही कला का भी विकास होता गया। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में अपनी आँखें खोली, उसी समय से उसने अपनी बुद्धि और कौशल के अनुसार अपने जीवन को सुखी तथा समृद्ध बनाने की कोशिश करने लगा। जिसमें कला ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने ऐसी कृतियों का सृजन किया, जो उनके जीवन को सुखद तथा सुचारू बनाने में सहायता कर सके। इसके लिये उन्होंने पत्थरों के औजारों, कोयलो तथा तूलिका से टेढ़ी–मेढ़ी रेखाकृतियों को गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर दिया। यदि शुद्ध शब्दों का प्रयोग कर कहा जाये तो अपने भावों की अमूर्त अभिव्यक्ति की। ये कलाकृतियाँ आदि मानव के जीवन के संघर्षों और उनकी भावनाओं की सजीव प्रस्तुति हैं। मानवों ने इन चित्रों में रेखाओं और आकारों द्वारा अपनी आत्म प्रगति को दर्शाया है। यदि इन कला कृतियों पर गौर करें तो हम पायेंगे कि सीमित साधनों एवं संघर्षमय जीवन के बावजूद उन्होंने जिस तरह से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की है, वास्तव में वो अद्‌भुत है। गुफाओं से मिले अवशेषों और साहित्यिक स्त्रोंतो के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में कला की एक विधा के रूप में चित्रकला आदिकाल से प्रचलित रही है। यहाँ चित्रकला का इतिहास मध्य प्रदेश की भीमबेटका व अन्य गुफाओं के चित्र तथा उत्तर प्रदेश की गुफा में बने पशुओं के रेखांकन एवं चित्रांकन से प्रारम्भ होकर तांत्रिक उपासना तक गया है। जिसमें मुख्य रूप से ज्यामितिय आकारों का प्रयोग कर स्वास्तिक, चक्र, त्रिशूल, वृक्ष, पशु–पक्षी आदि चित्रित किये गये हैं। जिससे ज्ञात होता है कि आदिम कला में प्रतिकात्मक अभिव्यक्ति है। क्योंकि वह अभिव्यक्ति प्रधान थी।

मुख शब्द: आदिम कला, अमूर्त कला, आधुनिक कला।

परिचय

आदिम कला

आज से हजारों वर्षों पूर्व मानव गुफाओं में रहता था और जंगली जानवरों का शिकार कर के अपनी भूख मिटाता था। जैसे–जैसे समय के साथ आदि मानव का बौद्धिक विकास बढ़ता गया वैसे–वैसे वह अपने जीवन को सुव्यवस्थित व सुचारु रुप से चलाने के लिये नई–नई खोज करता गया। कन्दराओं से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्र आदि मानव की जिज्ञासा, बौद्धिक कौशल एवं खोज करने की प्रवृत्ति के परिचायक हैं। साथ ही ये तत्कालीन यथार्थ जीवन की कठिनाईयाँ और उनके संघर्षों की कहानी भी बयां करते हैं।

प्रागैतिहासिक काल का समय आज से 50,000 ई॰ पूर्व के काल को मानते है। प्रागैतिहासिक काल में ही मानव ने सर्वप्रथम आग, हथियारों, पशुपालन, कृषि आदि को अपने जीवन का हिस्सा बनाया और इसी काल में प्रथम परिवार की अवधारणा भी बनी। इस काल के चित्र सम्पूर्ण विश्व में मिलते हैं। कहते है–'कला समाज का दर्पण है', यह युक्ति आदिम कला के संदर्भ में भी लागू होती है। यह उनके जीवन की व्यथा दर्शाती है। साथ ही यह आदिम मानव के

Copyright@ijesrr.org

जीवन का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग, उनके जीवन का आधार भी बन चुकी थी। उत्तर प्रदेश ,मध्य प्रदेश आदि स्थानों के दरियों से प्राप्त चित्रो से ज्ञात होता है कि गुहावासी मानव आखेट करने से पूर्व आदिम पशु का चित्र बनाकर उसपर जादू–टोना, टोटका आदि कर के अपने शिकार की सफलता पर विश्वास करता था। उनका विश्वास था कि जिस पशु को भी चित्र में अंकित करेंगें वह सरलता से उसके वश में आ जायेगा। इसी भावना के साथ वह शिकार के लिये निकलते थे। दरियों में प्रायः ऐसे चित्र मिले हैं, जिनमें तीरों, बरछों या भालों से बिंधे पशु चित्रित किये गये हैं। गुहावासी मानव अपने जीवन में सफलता पाने, भय को दूर रखने, अदृश्य शक्तियों की पूजा के लिये ज्यामितिय आकारों का सांकेतिक रूप में प्रयोग किया है। जिसमें त्रिभुज, वृत, आयताकार, स्वास्तिक, षटक् ोण, अंको तथा रेखाओं आदि अनेक प्रतीक चिह्नों को चित्रित कर, टोना–टोटका व जादू कर भय से निजात पाता था। जिसको सर्वप्रथम खड़िया, गेरू, कोयला, द्वारा रेखाकंन कर के बनाया गया था।

आदि मानव ने जब गुहा की दीवारों पर आकृतियाँ उकेरी, कला तभी अमूर्त हो गयी। कला कलाकार के भावों की अभिव्यक्ति होती है। जब भी मानव ने गुफा की दीवारों पर अपने मस्तिष्क एवं हृदय में उठ रहे भावों की अभिव्यक्ति रेखाचित्रों द्वारा की, कला उसी समय अमूर्त हो गयी। क्योंकि प्रकृति में रेखा नही होती, उसका निर्माण मानव ने किया। कला हमारे कलात्मक एवं अवचेतनात्मक मस्तिष्क की उपज है। जिसको कलाकार रेखा, रंग आदि द्वारा (अनेक माध्यमों के मुख्य तत्वों द्वारा) सृजित करता है तथा वह कलाकृति उस कलाकार विशेष की अभिव्यक्ति को दर्शक तक सम्प्रेषित करती है।

आदिम चित्र विश्व में स्पेन की अल्तामीरा, फ्रांस की लास्को (फ्रांकोकान्ट्राबियन क्षेत्र), अफ्रीका के एटलस पर्वत, सहारा मरूस्थल, आस्ट्रेलिया आदि में मुख्य रूप से पाये गये। भारत में उत्तर–प्रदेश के मिर्जापुर व मध्य–प्रदेश के भीमबेटका, पंचमढ़ी, होशंगाबाद, सिंहनपुर, दक्षिण भारत के क्षेत्रों में मुख्य रूप से पाये गये है। जिनमें मुख्यतः जंगली भैंसे, बारहसिंगा, हाथी, सांभर, जिराफ, धनुर्धर मानवों आदि का अंकन है। इसके साथ ही हाथी का आखेट, नर्तक, वादक, लम्बी चोच वाले पक्षी, शहद इकट्ठा करते, गाय चराते हुए एवं शिकार के अनेक चित्रों का अंकन है। जिसमें आदि मानव ने अपने भावो को सरलतम रूपों तथा ज्यामितिय आकारों में चित्रित किया है। इन चित्रों में निम्न विशेषतायें विद्यमान है–

1ण रेखा प्रधान है।

2ण चित्रों के आधार सरल हैं।

3ण कोई नियम या सिद्धान्त नही हैं।

4ण अभिव्यक्ति व सम्प्रेषण श्रेष्ठ है।

5ण कहीं–कही चित्रों में सपाट रंग भर दिये गये हैं।

6ण चित्रों में कहीं–कहीं आकृति निर्माण में सीधी, वक्र और आयताकार आदि ज्यामितिय रूपाकारों का प्रयोग है, जो प्रायः सांकेतिक रूप में दिखते हैं। इसमें स्वास्तिक, त्रिभुज, वृत, तथा षट्कोण शामिल हैं।

7ण ज्यामितिय आकारों का प्रयोग प्रकृति की विभिन्न शक्तियों या जादू–टोने के विश्वासों को व्यक्त करने हेतु किया गया है।

अमूर्त कला

अमूर्त कला का शाब्दिक अर्थ नॉन फिगरेटिव कला अर्थात् एब्स्ट्रेक्ट ऑर्ट है। इसे वस्तु निरपेक्ष कला भी कहते हैं। वस्तु निरपेक्ष कला में किसी भी वस्तु या आकृति का यथार्थ व वास्तविक चित्रण नही होता, बल्कि रेखाओं, रंगो, टेक्स्चर आदि

के द्वारा उस वस्तु के भाव तथा दृश्य भाव को दिखाया जाता है। अमूर्त कला में यथार्थ चित्रण पर विशेष ध्यान नही दिया जाता है। इसमें मुख्य रूप से सूक्ष्मता व सौन्दर्यता पर विशेष बल दिया जाता है। वर्तमान समय में कलाकारों द्वारा अमूर्त कला को प्रमुखता से अपनाया जा रहा है। इसके पीछे का कारण यह है कि इसमें सौन्दर्यानुभूति कराने की असीम स्वतंत्रता रहती है तथा अपने सृजनात्मक भावों को व्यक्त करने के लिये विभिन्न तकनीको का स्वतंत्रता पूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। आदिम कला में भी वस्तु निरपेक्षता का भाव चित्रण में दिखायी देता है तथा आधुनिक अमूर्त कला में भी यह भाव आकृति में समाहित है।

यलो–रेड–ब्लू, कान्डेन्स्की

आधुनिक अमूर्त कलाकार कलाकृतियों में सौन्दर्य एवं भावाभिव्यक्ति दर्शाने हेतु कलागत तत्वों के साथ–साथ विकृतिकरण का भी प्रयोग कर रहे हैं। कलाकार का सदैव यह उद्देश्य रहता है कि वह कुछ नया सृजन करे, जिसमें सुख की अनुभूति हो। अतः कलाकारों को नये सृजनात्मक मनोभावों के लिये परम्पराओं की ओर देखना पड़ा और कलाकारों ने प्रागैतिहासिक व जनजातीय

कला से सीख ली। व्यक्तिगत दृष्टिकोण अपनाकर उन प्रतीकों एवं संकेतो के माध्यम से नवीन कला शैली को जन्म दिया, जो आधुनिक अमूर्त चित्रण शैली के रूप में विद्यमान है। कलाकार अवचेतन मन की व्यथा को अपनी कलाकृति के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। विभिन्न नयी तकनीक, पद्धति एवं माध्यम का प्रयोग करके उसको सुन्दर बनाने की कोशिश भी करता है, जिसके कारण कभी–कभी ऐसे रहस्यात्मक रूपों की उत्पत्ति हो जाती है, जो इस संसार से परे व असाधारण होता है।

पश्चिमी कलाकार कान्डेन्स्की व पियट मोन्द्रियान को वस्तु निरपेक्ष कला का प्रणेता माना जाता है। कान्डिन्स्की ने अपना प्रथम वस्तु निरपेक्ष चित्र सन् 1910 में चित्रित किया। जिसके पश्चात् अनेक कलाकार वस्तु निरपेक्ष कलाकृतियों का सृजन करने के लिये प्रेरित हुए और उसमे सफल भी हुए। कान्डेन्स्की ने अपनी पुस्तक

''कला में आत्मा'' में यह कहा है कि ''कला को वस्तु स्थिति से मुक्त रखा जाये, ताकि कला में वे अमूर्त आकार नये आयाम से सौन्दर्य को व्यक्त कर सके।''

आदिम कला और अमूर्त कला में समानताएँ

जब भी हम अमूर्त चित्रकला व उसकी उत्पत्ति पर विचार करते हैं तो सर्वप्रथम हमारे मस्तिष्क में आदिम कला विचरण करने लगती है। अमूर्त चित्रण में प्रागैतिहासिक कला की विशेषताएं परिलक्षित होती हैं।

आदिम कला से तात्पर्य आदिम जातियों की कला परम्पराओं एवं संस्कृति से होता है, जो सदियों से चली आ रही हैं।

हालांकि समय एवं परिस्थितियों

के अनुसार थोड़े–बहुत परिवर्तन होते रहे, लेकिन उनके मूल तत्व आज भी विद्यमान हैं। इन आदिम जातियों के अन्तर्गत अफ्रीका की जंगली जातियाँ, ओसिनिया की प्री –कोलम्बियन, हिमयुग के शिकारियों एस्कीमो की, भारत के कोल–भीलो और नागाओ आदि की कला मुख्य रूप से आती है। आज भी उपरोक्त जातियों के वंशज जोकि संसार के

विभिन्न स्थानो से सम्बद्ध हैं, उसी तरीके से कलाकृतियाँ निरूपित करते चले आ रहे हैं, जैसे हजारों वर्ष पूर्व इनके पूर्वज किया करते थे। समय के साथ सब कुछ बदल गया लेकिन इन आदिम जातियों की कला को आज भी बाहरी दुनिया की सभ्यता और संस्कृति न बदल सकी। उनकी कलाकृतियों में आज भी वही सादगी है, जो हजारों वर्षों पूर्व हुआ करती थी और इनकी कलाओं में निहित ''सादगी'' ही एक ऐसा महत्वपूर्ण तत्व है जो आधुनिक कलाकारो को अपने ओर खींचे हुए है।

प्रारम्भ में कलाकारों द्वारा आदिम कला को तुच्छ और बर्बर कह कर उपेक्षित किया गया। लेकिन समय के साथ कलाकारों का नजरिया बदला और धीरे–धीरे कलाकार समझने लगे कि आदिम कला वास्तव में स्वाभाविक है। यह सीधे हृदय को आकर्षित करने की क्षमता रखती है। जिसके फलस्वरूप कलाकारों द्वारा धीरे–धीरे इस सत्य को स्वीकार किया जाने लगा और बर्बरता में ही उन्हे सŭची अभिव्यक्ति नजर आने लगी। आधुनिक कलाकार वर्तमान युग की जकड़न और तनाव से ऊबकर आदिम कला की सरलता व सादगी की ओर नवीन प्रेरणा पाने के लिए उन्मुख है। इस प्रकार कला के आदि और अन्त के दोनो सिरे एक–दूसरे से परस्पर जा मिले हैं।

अमूर्त एवं आदिम कला की समानता पर नजर डाले तो हमारे समक्ष अनेक कलाकारों की नामावली आ जायेगी जो आदिम कला से प्रभावित हैं। जिनकी रेखायें, रंगों के प्रयोग का तरीका, रूपाकार आदि आदिम कला से साम्यता रखते हैं। आदिम चित्रकला से प्रेरणा ग्रहण कर चित्रण करने वाले भारतीय कलाकारों में यामिनी राय का नाम अग्रणी रहा है। उनके चित्रण पद्धति में देश की आदिवासी कला एवं लोक संस्कृति के तत्व दिखायी पड़ते हैं। हालांकि यामिनी राय ने बंगाल के पटचित्रों की रेखायें, राजस्थान की मीणा जनजाति के चित्रों की रेखाओ से साम्य रखती हैं। एम॰ एफ॰ हुसैन, के॰एच॰ आरा, राम किंकर बैज, जे॰ स्वामीनाथन, मीरा मुखर्जी ऐसे कलाकार है, जो भारतीय आदिवासी कला से प्रभावित रहे। जिन्होनं` मोटी और सधी हुई कलात्मक रेखाओं से अनेक पौराणिक कथाओं और उनके पात्रों को निरूपित किया है। लक्ष्मण पै के चित्रों में उनके द्वारा प्रयोग किये गये रूप, रंग, रेखा एवं विषय–वस्तु में पूर्णतः आदिवासी कला की झलक दिख जाती है । इसी प्रकार राम किंकर बैज ने अपने चित्रों एवं मूर्ति शिल्पों के विषय–वस्तु के रूप में संथाल आदिवासी जातियों को चुना। ''संथाल नृत्य'',

''मिल की ओर'' जैसी कलाकृतियाँ इसके उदाहरण हैं। उपर्युक्त सभी कलाकारों ने आदिम तथा आदिवासी कला से प्रेरणा ग्रहण की। परन्तु जे॰ स्वामीनाथन ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने आदिवासी कला को विश्व प्रसिद्धि दिलायी। स्वामीनाथन ने मध्य–प्रदेश में गोंड एवं भील आदिवासी कलाकारों को समकालीन कलाकारों के समतुल्य हैसियत प्रदान करायी।

भारतीय कलाकारों की ही भाँति पाश्चात्य कलाकारों में रूसो, पिकासो, पॉल क्ली, गॉगिन और मातिस ने जब आदिम कला को उनके नजरिये से देखने का प्रयास किया तो उन्हें भी उसमें असीम सौन्दर्य दिखायी दिया, जिससे प्रेरणा पाकर इन्होंने अपनी कलाकृतियों को निरूपित किया। पॉल गागिन ने भावनाओं की अभिव्यक्ति में आदिम कला की सादगी व सरल आकारों की प्रभाविता को महसूस किया तथा आधुनिक कलाकारों को उनसे प्रेरणा लेने पर बल दिया। गॉगिन का ''पीला ईसा'', ''जेकोब का देवता'' चित्र इसके उदाहरण हैं। पाब्लो पिकासो को भी अफ्रीका की आदिवासी कला ने प्रभावित किया और उनसे प्रेरणा पाकर पिकासो ने आदिम कला के तत्वों को अपने कलाकृति के निरूपण का आधार बनाया। रूसो, पॉल क्ली, मिरो जैसे महान कलाकार ठीक उसी तरह अपनी कलाकृतियाँ गढ़ने लगे जैसे आदिम मानव

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-3 Issue-6 December- 2016 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

बनाया करते थे ।

यदि आदिम और अमूर्त कला की भावाभिव्यक्ति पर दृष्टिपात करें तो दोनों ही कलाओं में अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण रही है। उदाहरण स्वरूप उत्तर–प्रदेश के मिर्जापुर क्षेत्र में विन्ध्याचल पर्वत की कैमूर श्रृखलाओं में स्थित गुफाओं के उत्कीर्ण चित्र हैं। इनमें सोरहोघाट

क्षेत्र से प्राप्त 'सुअर का आखेट' चित्र महत्वपूर्ण है। जिसका चित्रण अत्यन्त मार्मिक व यथार्थ है। इस चित्र में सुअर का आधा खुला मुँह उसकी असहनीय पीड़ा की अभिव्यक्ति कर रहा है। इसी प्रकार का चित्र पाश्चात्य कलाकार एडवर्ड मुंच द्वारा बनाया गया ''द स्क्रीम'' है, जो आहत आत्मा की अभिव्यक्ति सहजता से कर रहा है। इससे यह सिद्ध होता है कि आदिम तथा अमूर्त कलाकारों के लिये भावाभिव्यक्ति महत्वपूर्ण रही है। भले ही सटीक भावाभिव्यक्ति को दर्शाने के लिये विकृतिकरण का ही सहारा क्यों न लेना पड़ा हो।

चूकि आधुनिक कला, कलाकारों को परम्पराओं और बन्धनों से मुक्त होकर चित्रण करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। अतः थोड़ा ध्यान से देखने पर हम पायेंगें कि आधुनिक कला में सादगीकरण की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। कलाकार रूपाकारों के प्रस्तुतीकरण में तोड़–मरोड़ करने लगे और भावाभिव्यक्ति के लिये विकृतिकरण का भी सहारा लेते रहे हैं। धीरे–धीरे वे रूपाकारों को घटाकर केवल इनके मूल तत्वों को ही निरूपित करने लगे। जिसके कारण कहीं–कहीं वो इतने सूक्ष्म हो गये हैं कि उनको पहचानना तक मुश्किल हो गया। नये ढंग की इस अभिव्यक्ति की प्रस्तुति के कारण कलाकारों को अभिव्यक्ति की पुरानी परम्परा का त्याग करना पड़ा।

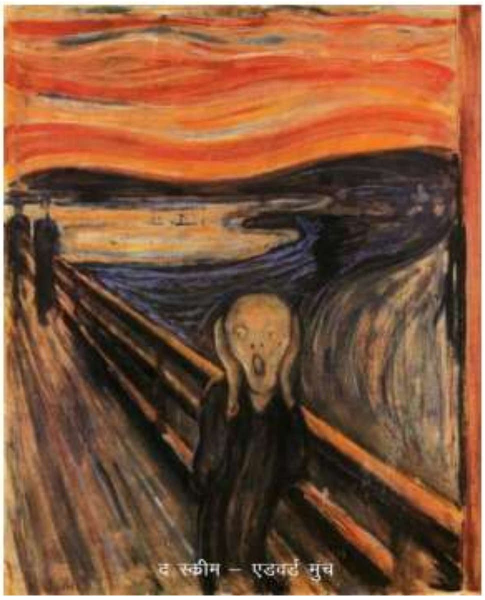
द स्क्रीम – एडवर्ड मुंच

निष्कर्ष

वर्तमान कला परिदृश्य के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि कला में अमूर्तन की प्रवृत्ति वर्तमान आधुनिक युग से नही, बल्कि प्रागैतिहासिक कालीन आदिम कला में भी विद्यमान रही है। हालांकि पूर्व पाषाण कालीन चित्रों में यथार्थवादी प्रवृत्ति हावी रही, किन्तु उत्तर–पाषाण कालीन चित्रों में कलाकारों ने अमूर्तन प्रवृत्ति का भरपूर उपयोग किया। स्पेन की अल्तामीरा गुफा में बनाये गये चित्र अत्यन्त यथार्थवादी चित्रों की तुलना में उत्तर–पाषाण कालीन खुली चट्टानों पर बनाये गये चित्र अपेक्षाकृत भद्दे और विकृत दिखायी देते हैं। किन्तु विषय–वस्तु और अभिव्यक्ति की दृष्टि से वे पाषाण कालीन चित्रों की तुलना में श्रेष्ठतर हैं। इस संदर्भ में 'सर हरर्बट रीड' का कथन उपयुक्त प्रतीत होता है कि ''आज कला अपनी तीस हजार वर्षों की परिक्रमा करती हुई फिर उसी कन्दरा में लौट आयी है, जहाँ से वह चली थी।''

संदर्भ

1ण शुक्ल, प्रयाग, आज की कला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, इलाहाबाद, पृष्ठ सं 82। 2. वाजपेयी, डॉ राजेन्द्र, आधुनिक कला, सस्मिट पब्लिकेशन्स, कानपुर, पृष्ठ सं 5,6।

2ण चतुर्वेदी, सीमा, समकालीन कला : आधुनिक चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में आदिम कला का प्रभाव, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, अंक 42 43, पृष्ठ सं 84।

3ण 'मावड़ी', डॉ मोहन सिंह, चित्रकला के मूल आधार, तक्षशिला प्रकाशन, पृष्ठ सं 29–31।

4ण अग्रवाल, जी॰ के॰, पश्चिम की कला,, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़, उत्तर–प्रदेश, पृष्ठ सं 2।

5ण तिवारी, श्रुतिकीर्ति, लोकाविश्कर इंटरनेशनल ई जर्नल, समकालीन कला : एक सर्वेक्षण, पृष्ठ सं 147–157,जून 2013।